

छात्र व छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं सांवेगिक परिपक्वता का अध्ययन

Ranjeet Kumar^{1*} Dr. Ramesh Kumar²

¹ Research Scholar, Department of Education, OPJS University, Churu Rajasthan

² Supervisor, Department of Education, OPJS University, Churu Rajasthan

सार – शोधकर्ता ने छात्रों के भावनात्मक परिपक्वता और मानसिक स्वास्थ्य के बीच संबंध का पता लगाने के लिए एक अध्ययन किया। छात्रों की स्थानीयता की शर्तों। स्कूल के लिंग और स्थानीयता के संदर्भ में छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। एक महत्वपूर्ण बात थी उच्च माध्यमिक छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता और मानसिक स्वास्थ्य के बीच संबंध। इसलिए परामर्शदाताओं और शिक्षकों को बनाने के लिए बुद्धिमान रणनीति अपनानी चाहिए छात्रों के लिए भावनात्मक परिपक्वता और मानसिक स्वास्थ्य को विकसित करने के लिए सहायक और अनुकूल शैक्षिक माहौल, सभी में तनाव और चुनौतियों का सामना करने के लिए जीवन का क्षेत्र।

-----X-----

परिचय

शिक्षा आजीवन चलने वाली सचेतन एवं प्राणमयी प्रक्रिया है। जन्म लेने के पश्चात् ही व्यक्ति अनेक परिस्थितियों का सामना करता है और विकासोन्मुख होता हुआ आगे बढ़ता रहता है। परिवर्तन की इस प्रक्रिया में वह अनुभव ग्रहण करता है इस अनुभव को ग्रहण करने में ही शिक्षा निहित है इसे परिभाषित करते हुए प्रो० अदावल, सुबोध ने कहा है कि, “शिक्षा वह सविचार प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति के विचारों एवं व्यवहारों में परिवर्तन एवं परिवर्धन होता है उसके स्वयं तथा समाज के कल्याण के लिए।” इस प्रकार की शिक्षा की परिकल्पना अत्यन्त व्यापक अर्थ में की गयी है जहां तक औपचारिक शिक्षा का सम्बन्ध है उसका सशक्त व सबल माध्यम है- शिक्षण। शिक्षण, शिक्षक, शिक्षार्थी तथा पाठ्यक्रम के मध्य चलने वाली वह प्रक्रिया है जिससे बालक की समस्त शक्तियों का स्वाभाविक विकास होता है जिससे कि बालक समाज का उपयोगी नागरिक बन सके।

इस शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षा के बारे में हार्न महोदय ने कहा है कि, “शिक्षा अतीत का चित्र प्रस्तुत करने का उत्तम कार्य करती है और उस चित्र को प्रस्तुत करके अतीत को सुरक्षित रखती है यह वर्तमान समय में भूतकाल की उपलब्धियों की रक्षा करने का उत्तम कार्य करती है। यह ज्ञान और शक्ति के वर्तमान

संग्रह में वृद्धि करके और इस प्रकार भविष्य को भूत से अच्छा बनाने की संभावना का सर्वोत्तम कार्य करती है।” शिक्षा के इस महत्व को स्वीकार करते हुए अब शिक्षा को सभी के लिए अनिवार्य बना दिया गया जिससे कि बालक अपने जीवन को इस प्रकार तैयार करे जिससे उसके व समाज के हितों में संघर्ष कम से कम हों, साथ ही वह शिक्षा के द्वारा अपने मूल्यों व आदर्शों का उन्नयन कर अपने को समाज के स्वरूप व वांछित विकास में योगदान कर सके।

आज शिक्षा ही वर्तमान गतिहीन समाज को जीवंत बनाती है ताकि वह विकास और परिवर्तन के प्रति कटिबद्ध हो सके। अतः शिक्षा द्वारा हमें एक ऐसे सीखने वाले समाज का निर्माण करना है जो जीवनपर्यन्त सीखने की प्रक्रिया में लगा रहे। शिक्षा शांतिपूर्ण समाज के परिवर्तन का एक मात्र साधन है जो मानव साधनों का विकास कर अन्य सभी संसाधनों के विकास को गुणात्मक रूप में प्रभावित करती है।

अतः “शिक्षा प्रकाश का वह स्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ प्रदर्शन करती है।” शिक्षा से हमें इस संसार में सुख, समृद्धि एवं सुयश प्राप्त होता है तथा परलोक में मोक्ष। इसलिए ‘ज्ञान को मनुष्य का तीसरा

नेत्र कहा गया है। शिक्षा द्वारा प्राप्त प्रकाश से हमारे संषयों का उन्मूलन एवं कठिनाइयों का निवारण होता है और जीवन के वास्तविक महत्व को समझने की शक्ति उत्पन्न होती है। शिक्षा से हमें ऐसा अर्थ पूर्ण दृष्टिकोण उपलब्ध होता है जिससे हम में बुद्धि, विवेक तथा निपुणता की वृद्धि होती है क्योंकि जिस व्यक्ति में सोचने समझने की शक्ति होती है, उसी को विकसित कहा जाता है। जो व्यक्ति अपने चारों ओर होने वाली घटनाओं के प्रति संवेदनशीलता प्रकट करता है, वही व्यक्ति समाज को कुछ दे सकता है। ऐसे व्यक्ति जिन्हें बदलते समाज में समायोजन स्थापित करने में कोई कठिनाई नहीं होती उसे यह स्थिति, शिक्षा द्वारा ही प्राप्त होती है अतः शिक्षा व्यक्ति का विकास करने में पूर्ण सहायता करती है।

शिक्षा की महत्ता पर प्लेटो ने कहा कि “संसार में सबसे श्रेष्ठ और सुन्दर कोई वस्तु यदि है तो वह है शिक्षा।” अतः मनुष्य बिना शिक्षा के मृतप्राय हो जाता है क्या सही या क्या गलत है, क्या धर्म है या क्या अधर्म है इस वस्तु स्थिति की जानकारी उसे बिना शिक्षा के नहीं हो पाती इसलिए कहा भी गया है कि शिक्षा विहीनम् मनुजः पशुभिः समानम्।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह कुछ अन्तर्निहित शक्तियों को लेकर संसार में जन्म लेता है इन्हीं अन्तर्निहित शक्तियों को धीरे-धीरे विकसित करके व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है। शिक्षा विकास का वह क्रम है जिससे व्यक्ति अपने को धीरे-धीरे विभिन्न प्रकार से अपने भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक वातावरण से अनुकूलन बना लेता है। बालक के विकास की प्रक्रिया माता के गर्भ से ही प्रारम्भ हो जाती है। जन्म के पश्चात् बालक का शैषवकाल प्रारम्भ हो जाता है। इस समय बालक को जो कुछ सिखाया जाता है उसका प्रभाव तुरन्त पड़ता है। फ्रायड का कथन है,

“मनुष्य को जो कुछ बनना होता है प्रारम्भ के 4.5 वर्षों में बन जाता है।” बाल्यावस्था में प्रवेश करते-करते उसका पर्याप्त विकास हो जाता है और वह अपने वातावरण से परिचित होने लगता है इसके बाद बालक किशोरावस्था में प्रवेश करता है इस अवस्था में बालक का सबसे तीव्र गति से विकास होता है। किशोरावस्था को जीवन का सबसे कठिन काल माना जाता है। सर स्टैनलेहल के अनुसार, “किशोरावस्था, बड़े संघर्ष, तनाव, तूफान तथा विरोध की अवस्था है।” किशोरावस्था में व्यक्ति के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों का विकास होता है। छात्रों में तीव्र इच्छा शक्ति, सोचने समझने, विचार करने, अन्तर करने व समस्या का समाधान करने की योग्यता उत्पन्न होती है।

प्रत्येक समाज कुछ रहन-सहन और जीवन-यापन की पद्धतियाँ और परम्परायें स्थापित करता है, नियम, कानून बनाता है, मान्यतायें एवं मानक निश्चित करता है ताकि व्यक्ति और समाज सुसंस्कृत हो सके, व्यक्तियों में आपसी विरोध कम हो सके तथा व्यक्ति और समाज में संतुलन बना रहे। इस प्रक्रिया में व्यक्ति की कुछ आवश्यकतायें, इच्छायें पूरी होती हैं तो कुछ को उसे बदलना पड़ता है अर्थात् उसे अपने समाज में समन्वय और समायोजन करना पड़ता है और यदि व्यक्ति इस प्रयास में असफल रहता है तो इसका प्रभाव उसके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है तथा कुसमायोजित होने से उनमें चिन्ता, तनाव, संघर्ष आदि उत्पन्न हो जाते हैं किन्तु यदि व्यक्ति संवेगात्मक रूप से परिपक्व होते हैं तो वे इन विपरीत परिस्थितियों में भी अपनेको समाज में उचित रूप से समायोजित करने का प्रयास करते हैं तथा मानसिक तनावको दूर करते हैं तभी वे मानसिक रूप से स्वस्थ होते हैं। समायोजन के लिये व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होना आवश्यक है। शिक्षा को व्यक्ति के व्यक्तित्व के सर्वांगीणविकास के लिये एक आदर्श, आवश्यक प्रक्रिया एवं माध्यम माना गया है।

आज का विद्यार्थी वर्ग जिस तरह के असामान्य व्यवहारों, मारपीट, हिंसा, उद्वेगता और उच्छ्वेदता का प्रदर्शन कर रहा है, जिस तरह से उनके नैतिक मूल्यों और सोच में परिवर्तन हो रहा है तथा इन व्यवहारों का जो प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ रहा है वह हमें एक बार अपने सम्पूर्ण सामाजिक ढांचे और व्यवस्था पर दृष्टि डालने के लिए बाध्य करता है और शिक्षा संस्थानों में व्याप्त कमियों तथा इन प्रवृत्तियों को बढ़ाने वाले प्रेरकों की समीक्षा करने के लिये प्रेरित करता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

किशोरावस्था भाग्य की ओर बढ़ते कदम का परिसूचक है तथा निम्न माध्यमिक स्तर से उच्च माध्यमिक स्तर में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी किशोरावस्था में पदार्पण करते हैं जिससे उनमें संवेगों की अधिकता होती है तथा वह अपने को वातावरण के साथ समायोजित करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। इस अवस्था में बालक अपने वातावरण, सामाजिक, आर्थिक स्तर तथा परिवार के साथ समायोजन में कठिनाई अनुभव करता है तथा विभिन्न असामान्य व्यवहारों को दर्शाता है क्योंकि वे मानसिक रूप से असंतुलित होते हैं जिनका प्रभाव उनके व्यवहार में दृष्टिगोचर होता है। यह व्यवहार उनकी मानसिक अस्वस्थता को दर्शाता है। मानसिक रूप से अस्वस्थ

विद्यार्थी का ध्यान शिक्षा से हटता जाता है और वह शिक्षा क्षेत्र में पिछड़ता जाता है तथा शैक्षिक उपलब्धियों को प्राप्त करने में असफल रहता है।

विपरीत परिस्थितियाँ वातावरण से अनुकूलन नहीं, आदि समस्याएं विद्यार्थी में मानसिक तनाव उत्पन्न करती हैं जिससे उनमें चिन्ता, कुण्ठा, निराशा उत्पन्न हो जाती है और उसका रुझान शिक्षा से हटकर असामाजिक क्रियाओं में लगने लगता है किन्तु यदि बालक संवेगात्मक रूप से परिपक्व तथा मानसिक रूप से स्वस्थ होगा तो वह इन समस्याओं पर विजय प्राप्त कर सकेगा एवं अपने को वातावरण से समायोजित कर पाएगा किन्तु यदि व्यक्ति असामान्य व्यवहारों को प्रदर्शित करता है तो उसके पीछे सामाजिक, आर्थिक, मानसिक एवं नैतिक कारक हो सकते हैं, विभिन्न मनः स्थितियाँ जैसे मानसिक तनाव और अस्वस्थता, व्यक्तित्व का असंतुलन, दूषित वातावरण का प्रभाव, चिन्ता, संवेगात्मक अपरिपक्वता, मानसिक अस्वस्थता आदि व्यक्ति के आचरण, व्यवहार, मानसिकता, शैक्षिक उपलब्धि तथा सामन्जस्य की क्षमता की विसंगतियाँ उसके व्यवहार तथा शिक्षा में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित होती हैं।

अतः शोधकर्ता द्वारा आवश्यक समझा गया कि किशोर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण, समायोजन, मानसिक स्वास्थ्य तथा संवेगात्मक परिपक्वता का प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर क्या पड़ेगा? इस शोध समस्या का अध्ययन करना, औचित्यपूर्ण एवं महत्वपूर्ण है। इसलिए ही यह शोध अध्ययन समीचीन प्रतीत होता है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

यही नहीं चार्टर बी. गुड ने इसे अपने शब्दों में कुछ इस प्रकार अलंकृत किया है:- “मुद्रित साहित्य के अपार भण्डार की कुंजी, अर्थ पूर्ण समस्या और विश्लेषणीय परिकल्पना के स्रोत का द्वार खोल देती है तथा समस्या के परिभाषीकरण, अध्ययन की विधि के चुनाव तथा प्राप्त सामग्री के तुलनात्मक विश्लेषण में सहायता करती है वास्तव में रचनात्मक, मौलिकता तथा चिन्तन के विकास हेतु विस्तृत एवं गंभीर अध्ययन आवश्यक है।”

चटर्जी, मुखर्जी तथा बनर्जी (1971) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि निम्न बौद्धिक स्तर के सन्दर्भ में परिवार का आकार तथा बच्चों की संख्या, शैक्षिक उपलब्धि से व्युत्क्रम रूप से सम्बन्धित है जबकि कुछ सम्बन्धों में अभिभावकों का सहयोग उच्च उपलब्धि के सन्दर्भ में सार्थक रूप से सकारात्मक रूप से सहायक है।

रेड्डी (1973) ने अपने अध्ययन में पाया कि विभिन्न घर जैसे - शिक्षा के प्रति अभिभावकों के विचार, घर का सांवेगिक वातावरण, अभिभावकों का प्रोत्साहन तथा घर में प्राप्त शैक्षिक सुविधायें, एक विषय या अन्य विषयों की उपलब्धि के साथ सार्थक रूप से सम्बन्धित हैं।

देवास (1979) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि विद्यालयी उपलब्धि विद्यार्थियों के सांस्कृतिक स्तर से आर्थिक रूप से सम्बन्धित नहीं है।

सोलंकी (1979) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उनके पारिवारिक वातावरण से सम्बन्धित है। परिवार में प्राप्त शैक्षिक सुविधायें तथा भावनात्मक प्रसन्नता, विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को सार्थक रूप से प्रभावित करती हैं।

मिश्रा (1982) ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च वैज्ञानिक सृजनात्मकता वाली छात्रायें, निम्न वैज्ञानिक सृजनात्मकता वाली छात्राओं की अपेक्षा अपने घर में अधिक स्फूर्ति, प्रेरणा को दर्शाती थी जबकि उच्च वैज्ञानिक सृजनात्मकता वाले छात्र अपने पारिवारिक वातावरण में कम अलगाव को प्रदर्शित करते हैं।

राव (1982) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों की पारिवारिक स्थिति, विद्यालयी स्थिति तथा उनकी व्यक्तिगत विशेषता सामूहिक रूप से उनकी अध्ययन उपलब्धि को प्रभावित करती थी। पारिवारिक स्थिति, घर में प्राप्त अध्ययन सुविधायें, घर का प्रकार, अभिभावकों का शैक्षिक स्तर, अभिभावकों का व्यवसाय, परिवार की आय तथा परिवार के सदस्यों का सामाजिक क्रियाकलापों में भाग लेना आदि विशेषतायें, बच्चों की अध्ययन उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं।

सिन्हा (1978) ने अपने अध्ययन में पाया कि इंजीनियर छात्र, मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में विश्वविद्यालय छात्रों की अपेक्षा सार्थक रूप से उच्च थे। संवेगात्मक सुरक्षा के संदर्भ में विश्वविद्यालयी छात्र एवं छात्रों में कोई अन्तर नहीं था। मानविकी तथा समाज-विज्ञान विद्यार्थियों की संवेगात्मक सुरक्षा में कोई अन्तर नहीं था। प्राकृतिक विज्ञान वर्ग के छात्र, मानविकी तथा समाज विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा संवेगात्मक रूप से अधिक सुरक्षित थे।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तावित अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:-

1. किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण, समायोजन, मानसिक स्वास्थ्य तथा संवेगात्मक परिपक्वता का प्रभाव जात करना।
2. शैक्षिक वर्ग, (कला एवं विज्ञान) निवास क्षेत्र (ग्रामीण तथा शहरी) तथा लिंग भेद (छात्र तथा छात्रा) के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पारिवारिक वातावरण समायोजन, मानसिक स्वास्थ्य तथा संवेगात्मक परिपक्वता के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अनुसंधान विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। सामाजिक तथा शैक्षिक क्षेत्रों में सर्वेक्षण एक समस्या से सम्बन्धित आँकड़ों के संकलन का महत्वपूर्ण साधन व उपकरण है। सर्वेक्षण अनुसंधान का सम्बन्ध उन सामान्य समस्याओं से होता है जिसके अन्तर्गत यह निश्चित किया जाता है कि कौन सा चर अन्य किस चर से किस रूप में किस सीमा तक सम्बन्ध रखता है। इस प्रकार चरों की स्थिति का सर्वेक्षण ही इसका मूल उद्देश्य होता है। सर्वेक्षण अनुसंधान की प्रकृति संवेष्टात्मक होने के कारण किसी भी समस्या से सम्बन्धित अनुसंधान के आरम्भिक स्तर में बहुत ही उपयोगी होती है।

विश्लेषण एवं व्याख्या

उच्च तथा निम्न मानसिक स्वास्थ्य वाली शहरी कला वर्ग की छात्राओं के मध्यमान में अन्तर बहुत कम है। अतः स्पष्ट है कि उच्च तथा निम्न मानसिक स्वास्थ्य वाली शहरी क्षेत्र के कला वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि समान है।

तालिका-1 उच्च तथा निम्न मानसिक स्वास्थ्य वाले शहरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि

छात्र वर्ग	संख्या (छ)	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
उच्च मानसिक स्वास्थ्य	114	59.31	5.51	5.69	0.01
निम्न मानसिक स्वास्थ्य	86	54.83	5.96		

तालिका-2 उच्च तथा निम्न समायोजित शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि

छात्र वर्ग	संख्या (छ)	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
उच्च मानसिक स्वास्थ्य	96	59.34	6.05	0.91	0.01
निम्न मानसिक स्वास्थ्य	104	60.11	5.89		

तालिका- 3 उच्च तथा निम्न संवेगात्मक वाले ग्रामीण विज्ञान वर्ग के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि

छात्र वर्ग	संख्या (छ)	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
उच्च संवेगात्मक परिपक्वता	52	50.82	50.82	1.37	0.01
निम्न संवेगात्मक परिपक्वता	48	52.83	52.83		

तालिका- 4 उच्च तथा निम्न संवेगात्मक परिपक्वता वाले ग्रामीण कला वर्ग के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि

छात्र वर्ग	संख्या (छ)	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
उच्च संवेगात्मक परिपक्वता	51	52.67	7.37	2.25	0.05
निम्न संवेगात्मक परिपक्वता	49	49.45	7.05		

परिणामों की व्याख्या -

1. शहरी क्षेत्र के किशोर छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगों का प्रभाव नहीं पड़ता है, वरन् उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाला चर समायोजन है क्योंकि प्राप्त परिणामों के आधार पर उच्च समायोजित छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में अधिकता है जबकि निम्न मानसिक स्वास्थ्य तथा निम्न पारिवारिक वातावरण वाले छात्र अपनी शिक्षा के प्रति सजग हैं।
2. ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर लिये गये चरों (पारिवारिक वातावरण, समायोजन, मानसिक स्वास्थ्य तथा संवेगात्मक परिपक्वता) में से किसी का भी प्रभाव नहीं पड़ता वरन् अन्य चर शिक्षा को प्रभावित करते हैं।
3. शहरी क्षेत्र की किशोर छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में समानता पायी गई। अतः लिए गए चरों में से किसी चर का स्पष्ट प्रभाव उनकी

शैक्षिक उपलब्धि पर नहीं पड़ता है वरन् अन्य चर उनकी शिक्षा को प्रभावित करते हैं।

उपसंहार

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयोग किये गये उपकरणों को व्यवस्थित कर एवं तालिका बद्ध कर व्याख्या की गयी है। जिसके फलस्वरूप अध्ययन के परिणामों व व्याख्या के आधार पर जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं, इन्हीं निष्कर्षों का विवरण निम्न पंक्तियों में प्रस्तुत है। उच्च पारिवारिक वातावरण वाले शहरी छात्रों की तुलना में निम्न पारिवारिक वातावरण वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च है जबकि उच्च तथा निम्न पारिवारिक वातावरण वाली शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में समानता है। इसी भांति उच्च तथा निम्न पारिवारिक वातावरण वाले ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि समान है जबकि उच्च पारिवारिक वातावरण वाली ग्रामीण छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि, निम्न पारिवारिक वातावरण वाली छात्राओं से अधिक है। उच्च तथा निम्न सांवेगिक परिपक्वता वाली शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में समानता है जबकि उच्च सांवेगिक परिपक्वता वाले शहरी छात्रों की तुलना में निम्न सांवेगिक परिपक्वता वाले शहरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक है। इसी भांति उच्च तथा निम्न सांवेगिक परिपक्वता वाले ग्रामीण छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि समान है जबकि उच्च सांवेगिक परिपक्वता वाली ग्रामीण छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि, निम्न सांवेगिक परिपक्वता वाली ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अदावल, एस.वी. तथा एम.डनियाल भारतीय शिक्षा की समानताएं तथा प्रवृत्तियाँ लखनऊ, 30 प्र० ग्रन्थ अकादमी, 1975
2. बेस्ट, जे. डब्लू. रिसर्चस् इन एजुकेशन, फिफ्टी एडीशन, 1986 भागीरथ, जी. एस. कोरिलेट्स ऑफ अकेडमिक अचीवमेण्ड एज परसीवड वाय द टीचर्स एण्ड स्टूडेंट्स ऑफ हाईस्कूल, पी. एच. डी. एजुकेशन, पंजाब विवि. 1987
3. रेड्डी, आई. वी. आर. अकेडमिक एडजस्टमेन्ट इन रिलेशन टू स्कूलोस्टिक अचीवमेन्ट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल प्यूपिल अ लांगिट्यूडिनल स्टडी, पी. एच. डीसाइकोलॉजी, एस. वी. वि. 1978.

4. रेड्डी वी. एल. एन. अ स्टडी ऑफ सरटेन फैक्टर्स एसोसिएटड विद अकेडमिक अचीवमेन्ट एट द फर्स्ट इयर डिग्री एक्सामिनेशन, पी. एच. डी. एजुकेशन एम. एस. यूकू 1973
5. राव. डी. जी. अ स्टडी ऑफ सम फैक्टर्स, रिलेटेड टू स्कूलोस्टिक अचीवमेन्ट, ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, पेज 342, 1965
6. चटर्जी, एस. मुखर्जी. एमकृव बनर्जी. एस. एन. इफेक्ट ऑफ सरटेन सोसियो-इकोनॉमिक फैक्टर्स ऑन द स्कूलोस्टिक अचीवमेन्ट ऑफ द स्कूल चिल्ड्रेन, सायकोमैट्रिक रिसर्च एण्ड सर्विस यूनिट, फर्स्ट, कलकत्ता, 1971
7. राव. एस. एन. स्टूडेंट्स परफार्मेंस इन रिलेशन टू सम आसपेक्ट्स ऑफ पर्सनेल्टी एण्ड अकेडमिक अचीवमेन्ट, ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, पेज 342, 1963
8. राव, एस. एण्ड सुब्रह्मण्यम एस. ए इन्टेन्सिव स्टडी ऑफ सरटेन फैक्टर्स इन्फ्लुएन्सिंग द रीडिंग अटेन्मेन्ट ऑफ प्राइमरी स्कूल चिल्ड्रेन, डिपार्टमेन्ट ऑफ एजुकेशन, एसवी. वि. वि., 1982 (एन.सी.ई.आर.टी. फाइनेन्सड)
9. सिन्हा, एच. सी. शैक्षिक अनुसंधान, विकास पब्लिशिंग हाउस, 1979.
10. सोलंकी, आर. बी. अ स्टडी ऑफ द होम एन्वायरमेन्ट, सोशियो-इकोनॉमिक स्टेट्स एण्ड इकोनामिक मैनेजमेन्ट इन रिलेशन टू द अकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ द फर्स्ट इयर कालेज स्टूडेंट्स ऑफ एम. एस. यूनीवर्सिटी, बडौदा, पी-एच.डी. एजुकेशन, एम. ए. वि. वि. बडौदा, 1979
11. देवास, जे. के. एजुकेशनल अटेनमेन्ट एज ए फंक्शन ऑफ सरटेन वेरियेबल्स, पी. एच. डी. सायकोलॉजी, गुजरात वि. वि. 1979
12. धामी, जी. एस. इन्टेलिजेन्स, इमोशनल मैच्योरिटी एण्ड सोशियो-इकोनामिक स्टेट्स एज फैक्टर्स इन्डिकेटिव ऑफ सक्सेज इन

स्कैलोस्टिक अचीवमेण्ट, पी. एच. डी. एजुकेशन,
पंजाब विवि., 1974

13. कुमार, वी. माल एडजस्टमेन्ट अमेरा सरटेन हायर
सेकेण्डरी स्टूडेन्ट्स एण्ड इट्स रिलेशन टू देयर
अटेनमेन्ट, ए सर्वे ऑफ़ रिसर्च इन एजुकेशन, पेज
332, 1963
14. वॉयड, नील, रिचर्ड, द रोल ऑफ़ इमोशनल मैच्योरिटी
इन ट्रिनिंग एण्ड ड्राइविंग इन्वाल्वमेन्ट अमंग कालेज
ग्रेज्यूएट स्टूडेन्ट्स डिजरेशन एबस्ट्रेक्ट
इन्टरनेशनल ए ह्यूमेनिटी एण्ड सोशल साइन्स,
वाल्यूम 42 (5), पेज 1828-2331 (ए), 1981

Corresponding Author

Ranjeet Kumar*

Research Scholar, Department of Education, OPJS
University, Churu Rajasthan

baindasunil123@gmail.com